CHAPTER 51

SANSKRIT

Doctoral Theses

574. झा (सुभद्रा)

ब्रह्मसूत्र के भाष्यों एवं आगमों में प्रतिपादित पांचरात्र मत का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा

Th 16919

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में ब्रह्मसूत्र का महत्त्व, ब्रह्मसूत्र में प्रतिपादित सिद्धान्त, विभिन्नवाद तथा ब्रह्मसूत्र में पांचरात्र की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। ब्रह्मसूत्र के भाष्यों में पांचरात्र मत का अध्ययन किया गया है। आगमों का परिचय देते हुए पांचरात्र सिद्धान्त का उद्‌गम और विकास के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया गया है। आगमों में पांचरात्र मत का विश्लेषण किया गया है । ब्रह्मसूत्र भाष्यों एवं आगमों में पांचरात्र मत का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

विषय सूची

1. ब्रह्मसूत्र में प्रतिपादित पांचरात्र मत 2. ब्रह्मसूत्र के भाष्यों में प्रतिपादित पांचरात्र मत का अध्ययन 3. आगमों का परिचय एवं पांचरात्र सिद्धान्त का उद्‌गम और विकास 4. आगमों में प्रतिपादित पांचरात्र मत का अध्ययन 5. ब्रह्मसूत्र भाष्यों एवं आगमों में प्रतिपादित पांचरात्र मत का तुलनात्मक अध्ययन। उपसंहार एवं संदर्भ ग्रन्थ सूची ।

575. BAR (Deen Bandhu)

Sociological Study of the Women Characters in Rajatarangini.

Supervisor : Dr. Sharada Sharma

Th 16921

Abstract

Deals with the meaning of Rajatarangini and sources of this book. Life history of "Kalhana" is described. Women as mother occupies great honour and prestige in society. Almost all aspect of mother character has been described. Daughter is a brief light in the family. She begins her life getting good education and training from her parent's house. Her duties and rights are nicely narrated. Women as wife occupies a prestigious place in soceity. The remarkable wives of Rajatarangini find prominent place in the thesis. The queens of Rajatarangini have enjoyed respect and high status in soceity. They are good administrators, capable organizets, clever diplomats and bold fighters. God, goddess and their importance have been narrated. Style of the women, their beauty, dress and ornaments have been described. Sati, Devadasi, prostitute women and other low class characters have been narrated.

Contents

1. Kalhana and his Rajatarangini. 2. Women as mother. 3. Daughter. 4. Women as wife. 5. Queens of Rajatarangini. 6. God and Goddess. 7. Style of women. 8. Social life of other character. Conclusion and Bibliography.

576. मंजू रानी

राजानक भोज का पातंजल योगदर्शन को योगदान ।

निर्देशिका : प्रो. शकुन्तला पुंजानी

Th 16802

सारांश

शोध ग्रंथ में राजानक भोज योग का अर्थ स्पष्ट करते हुए क्रमशः चित्त और निरोध की विशेष व्यख्या की गई है। भोजदेव के अनुसार चित्त और उसकी वृत्तियों का निरूपण करते हुए प्रथमतः चित्त के स्वरूप का विस्तृत वर्णन किया गया है। क्लेश और कर्म स्वस्प का अध्ययन किया गया है। राजानक भोज के अनुसार ईश्वर के स्वरूप का प्रतिपादन किया गया है। साधक भेद से योग के भिन्न-भिन्न साधनों के स्वरूप का अध्ययन है। राजानक भोज द्वारा उल्लिखित द्रष्टा एवं दृश्य का वर्णन किया गया है। योग के अंतिम लक्ष्य कैवल्य स्वरूप को प्रतिपादित किया गया है। राजानक भोज कैवल्य स्वरूप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि द्रष्टा एवं दृश्य के संयोग

का अभाव अर्थात् पुरुष को अपने स्वरूप का वास्तविक ज्ञान हो जाना ही कैवल्य है।

विषय सूची

1. भूमिका 2. राजानक भोज के अनुसार योग का लक्षण एवं स्वरूप 3. राजानक भोज के अनुसार चित्त और उसकी वृत्तियां 4. राजानक भोज के अनुसार कलेश एवं कर्म-स्वरूप 5. राजानक भोज के अनुसार ईश्वर का स्वरूप 6. राजानक भोज के अनुसार योगसाधना के सोपान 7. राजानक भोज के अनुसार द्रष्टा एवं दृश्य का स्वरूप 8. राजानक भोज के अनुसार योगसूत्र में प्रतिपादित विभूमियों का स्वरूप 9. राजानक भोज के अनुसार कैवल्य का स्वरूप 10. उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

577. महापात्र (हरिपद)

आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों की परम्परा में डॉ. हरिनारायण दीक्षित के महाकाव्यों का मूल्यांकन ।

निर्देशक : डॉ. गिरीशचन्द्र पन्त

Th 16803

सारांश

शोध प्रबंध में डॉ. हरिनारायण दीक्षित का व्यक्तित्व, कर्तृत्त्व एवं आधुनिक संस्कृत महाकाव्य की परम्परा में स्थान, महाकाव्यों की कथावस्तु, के अन्तर्गत कवि का जन्म एवं परिवार, शिक्षा, कार्यक्षेत्र, पदक एवं पुरस्कार, वैदुष्य और कृतियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। डॉ. हरिनारायण दीक्षित के महाकाव्यों में साहित्यिक तत्व के अन्तर्गत रस और गुणों का विवेचन किया गया है। डॉ. हरिनारायण दीक्षित के महाकाव्यों में साहित्यिक तत्व के अन्तर्गत रीति, अलंकार का विवेचन किया गया है। डॉ. हरिनारायण दीक्षित के महाकाव्यों में साहित्यिक तत्व-के अन्तर्गत काव्यदोष, भाषाविधान, छन्द का विवेचन किया गया है। डॉ. हरिनारायण दीक्षित के महाकाव्यों में सामाजिक एवं राष्ट्रीय तत्व के अन्तर्गत महाकाव्यों में प्रयुक्त सामाजिक एवं राष्ट्रीय तत्व पर प्रकाश डाला गया है।

विषय सूची

1. भूमिका 2. डॉ. हरिनारायण दीक्षित का परिचय, व्यक्तित्व, कर्तृत्त्व, आधुनिक

संस्कृत महाकाव्यों की परम्परा में स्थान एवं महाकाव्यों की कथावस्तु 3. डॉ. हरिनारायण दीक्षित के महाकाव्यों में साहित्यिक तत्व : (1) रस (2) गुण 4. डॉ. हरिनारायण दीक्षित के महाकाव्यों में साहित्यिक तत्व : (1) रीति (2) अलंकार 5. डॉ. हरिनारायण दीक्षित के महाकाव्यों में साहित्यिक तत्व : (1) काव्यदोष (2) भाषा विधान (3) छन्दो योजना 6. डॉ. हरिनारायण दीक्षित के महाकाव्यों में सामाजिक एवं राष्ट्रीय तत्व 7. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

578. मिश्र (कौशिक कुमार)

संस्कृतनाट्यरचना-प्रयोग और रसाभिव्यक्ति-नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थों के परिप्रेक्ष्य में ।

निर्देशक : डॉ. जे. पी. मिश्र

Th 16915

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में संस्कृत नाट्य के उत्पत्ति और विकास का अध्ययन प्राचीन और अर्वाचीन मतो के अनुसार किया गया है । इसमें भारतीय नाटक पर पाश्चात्य प्रभाव का विश्लेषण किया गया है । इसमें इतिवृत विधान या कथावस्तु के भेद विभाजन आदि का विश्लेषण किया गया है । नाट्यमण्डप या प्रेक्षागृह तथा नाट्य प्रस्तुतिकरण का विस्तृत अध्ययन किया गया है । नाट्य अभिनय को परिभाषित करते हुए उसके प्रकारों यथाः आंगिकाभिनय, वाचिकाभिनभ, आहार्याभिनय, सात्विकाभिनय का अध्ययन व विश्लेषण किया गया है । इसमें रस की परिभाषा, उपादान, भाव, निष्पत्ति की विस्तृत व्याख्या की गई है ।

विषय सूची

1.संस्कृतनाट्य-उत्पत्ति और विकास 2. इतिवृत्त विधान 3. नाट्यमण्डप (प्रेक्षागृह) तथा प्रस्तुतिकरण 4. नाट्याभिनय 5.रसाभिव्यक्तिः चरम लक्ष्य, संग्रन्थावामि।

579. मिश्र (राजीव कुमार)

दिल्ली के प्रमुख स्थापत्य का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में।

निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र एवं डॉ. रामदेव झा

Th 16804

सारांश

शोध प्रबंध में दिल्ली के ऐतिहासिक एवं भौगोलिक अध्ययन के साथ-साथ वहां की संस्कृति, जनसमुदाय, जनसुविधाएं, सरकार इत्यादि का विस्तृत विवेचन किया गया है। वास्तुशास्त्र का स्वरूप, उत्पत्ति एवं विकास का विवेचन किया गया है तथा मस्जिदों, मकबरों, दुर्ग के अवयवों का भी वर्णन किया गया है। सल्तनतकालीन स्थापत्य का वास्तुशास्त्रीय दृष्टिकोण से विवेचन किया गया है, साथ ही उनकी ऐतिहासिकता पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। मुगल कालीन स्थापत्य का वास्तुशास्त्रीय विवेचन के साथ-साथ उनके ऐतिहासिकता का भी विवेचन किया गया है। ब्रिटिश कालीन स्थापत्य का वास्तुशास्त्रीय विवेचन किया गया है। तथा प्रबन्ध के अन्त में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है ।

विषय सूची

1. दिल्ली : एक विहंगम दृष्टि 2. वास्तुशास्त्र का परिचय 3. तुगलक कालीन स्थापत्य : वास्तुशास्त्रीय अध्ययन 4. मुगल कालीन स्थापत्य : वास्तुशास्त्रीय अध्ययन 5. ब्रिटिशकालीन स्थापत्यःवास्तुशास्त्रीय अध्ययन 6. निष्कर्ष एवं उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

580. MISHRA (Samir Kumar)
Srimadbhagavadgita Aur Immanuel Kant Ke Nitisastra Ka Tulanatmaka Adhyayana.
Supervisor : Prof. Madan Mohan Agrawal
Th 16920

Abstract

The difinition of ethics, its nature and scope, methodology, utility and its relation to other subjects is discussed. A survey of Indian ethics right from the Vedas to Indian philosophy which includes heterodox and othodox schools of thoughts as well is made. Focuses on the ethics of the Gita. Deals with the concept of dharma, conflict of dharma, niskama-karma and why it is considered as ethical treatise of Indian philosophy and so on. Deals with voluminous material relating to western philosophy to establish the possibility of a world philosophy by synthesising the ideals of the two i.e. east and west. Focuses on the ethics of Kant which also combines the two extreme of western thought. Makes a critical and comparative study focusing on the ethical thoughts of the Gita and than that of Kant. As we know that ethics is the philosophy of life, hence, the ethical thought of

the Gita and Kant is for lokasamgraha or humanity in itself. Makes a comparative study between the ethics of the Gita and than that of Kant, their appraisals and also tried critically to bring out their drawbacks.

Contents

1. Indian ethics : Its nature and development. 2. Ethics in early Indian texts. 3. Ethics of the Gita. 4. Survey of western ethics. 5. Ethics of Kant. 6. Ethics of the Gita and Kant : A comparative study. 7. Conclusion and Bibliography.

581. यादव (राजमंगल)

20वीं शताब्दी के मौलिक संस्कृत काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों का काव्यशास्त्र को अवदान।

निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा

Th 16922

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में 20वी शताब्दी के ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों का परिचय एवं कृतियों में विवेचित प्रमुख काव्यशास्त्रीय तत्त्वों पर विचार-विमर्श किया गया है। इसके अतिरिक्त इस शताब्दी के 12 प्रमुख टीका ग्रन्थों तथा 6 समीक्षा ग्रन्थों को भी सम्मिलित किया गया है। इसके अन्तगर्त प्राचीन एवं अर्वाचीन परम्परा के आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य के प्रयोजन एवं कारण पर विचार-विमर्श किया गया है। प्राचीन एवं अर्वाचीन आचार्यों द्वारा प्रस्तुत काव्यलक्षण, काव्यभेद और शब्दार्थशक्ति के सम्बन्ध में उनके मतों को लक्षणोदाहरणपूर्वक प्रस्तुत किया गया है। रसात्मत्व, अलङ्कारात्मत्व, रीत्यात्मत्व, वक्रोक्त्यात्मत्व, ध्वन्यात्मत्व, औचित्यात्मत्व तथा चमत्कार के काव्यात्मत्व पर प्राचीन एवं अर्वाचीन आचार्यों के मतों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें कविव्यापार एवं सहृदय के सन्दर्भ में प्राचीन और अर्वाचीन आचार्यों की अवधारणाओं को निरूपित किया गया है । समस्त काव्यशास्त्रीय तत्त्वों के सन्दर्भ में प्राचीन एवं अर्वाचीन आलङ्कारिकों के मतों को तुलनात्मक दृष्टि से उपस्थापित किया गया है। अर्वाचीन काव्यशास्त्रीय परम्परा के आचार्य द्वारा प्रतिपादित मौलिक तथ्यों को उपस्थापित किया गया है।

विषय सूची

1.काव्यशास्त्रीय परम्परा एवं 20वीं शताब्दी में संस्कृत काव्यशास्त्र 2. काव्यप्रयोजन

और काव्यकारण विमर्श 3. काव्यस्वरूप, काव्यभेद एवं शब्दार्थशक्ति विवेचन 4. काव्यात्मविमर्श 5. कविव्यापार एवं सहृदय निरूपण 6. रीति-वृत्ति, प्रवृत्ति, गुणालङ्कार तथा दोष विवेचन 7. 20वीं शताब्दी के काव्यशास्त्र का मूल्यांकन । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची एवं परिशिष्ट ।

582. रमा

चारूदत्त-कथा का उद्‌भव और विकास ।

निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र

Th 16916

सारांश

प्रस्तुत शोध ग्रंथ में वैयाकरणों के द्वारा दिये गये पैशाचीभाषा विषयक सूत्रों का संकलन, उनकी परस्पर तुलना और समीक्षा की गई है । इसमें बृहत्कथा के रूपान्तरणों का सार-संग्रह है। बृहत्कथाश्लोकसंग्रह की सानुदासकथा और वसुदेवहिण्डी की चारूदत्तकथा की तुलना और विश्लेषण की गई है । मृच्छकटिकम् की आधारभूता चारूदत्तकथा की अन्य साक्ष्यों के आधार पर पुष्टि और तदनुसार मूलकथावस्तु की परिकल्पना किया गया है। ईसा की आठवीं शती से लेकर सोलहवीं शती तक की चारूदत्त विषयक चरित-कथाओं और दृष्टान्त-कथाओं का सार-संग्रह, उनकी पारस्परिक तुलना और विश्लेषण किया गया है। सानुदास चारूदत्तकथा में जो कथानक रूढ़ियाँ मिली है, उनका निर्देश किया गया है ।

विषय सूची

1.आमुख 2. गुणाढ्य, बृहत्कथा और पैशाचीभाषा 3. बृहत्कथा के रूपान्तर 4. श्लोकसंग्रह की सानुदासकथा और वसुदेवहिण्डी की चारूदत्तकथा का तुलनात्मक अध्ययन 5. चारूदत्तकथा के अन्य सन्दर्भ 6. कथानक रूढ़ियों का प्रव्रजन । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

583. राजेश कुमार

द्वैत-वेदान्त सम्मत पदार्थ-मीमांसा ।

निर्देशक : प्रो. मदन मोहन अग्रवाल

Th 16805

सारांश

शोध प्रबंध में पदार्थ के दार्शनिक सिद्धांतों की आलोचनात्मक एवं वैज्ञानिक समीक्षा करने का प्रयास किया गया है। जगत्, जीव, ब्रह्म और ईश्वर के स्वरूप पर विचार किया गया है। शंकर का अद्वैतवाद, रामानुज का विशिष्टाद्वैतवाद, निम्बार्क का द्वैताद्वैतवाद, वल्लभ का शुद्धाद्वैतवाद और मध्व का द्वैतवाद। इन पांचों सिद्धान्तों के अनुसार जीव, जगत् और ईश्वर पर विस्तृत समीक्षा की गई है। भारतीय दर्शन के सभी पदार्थशास्त्रिय दर्शनों के पदार्थ विवेचन को एक साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । द्वैत-वेदान्त के पदार्थ पर विचार किया गया है। मध्व के पहले पदार्थ द्रव्य पर विचार किया गया है । गुण का स्वरूप और उसके भेद पर विचार किया गया है । मध्व के पांच गौण पदार्थों का विवेचन किया गया है । शक्ति, सादृश्य एवं अभाव का स्वरूप और उसके भेद पर विचार किया गया है । द्वैत-वेदान्त का अन्य पदार्थवादी दर्शनों से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । मध्व की समायोजन पद्धति पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । मध्व के भारतीय पदार्थशास्त्र के योगदान को बताया गया है ।

विषय सूची

1. भूमिका : वेदान्त-परम्परा 2. भारतीय दर्शन में पदार्थ विषयक परम्परा 3. द्वैत-वेदान्त में पदार्थ की अवधारणा 4. द्रव्य का स्वरूप और उसके भेद 5. गुण का स्वरूप और उसके भेद 6. कर्म, सामान्य, विशेष, विशिष्ट एवं अंशी का स्वरूप और उनके भेद 7. शक्ति, सादृश्य एवं अभाव का स्वरूप और उसके भेद 8. द्वैत-वेदान्त से अन्य भारतीय दर्शनों की पदार्थविषयक समीक्षा 9. उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

584. वेदनिधि

युक्तिदीपिका : एक दार्शनिक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. रमेश कुमार शर्मा

Th 16800

सारांश

शोध प्रबंध में युक्तिदीपिका का दार्शनिक अध्ययन किया गया है। इसके अन्तर्गत सांख्य चिन्तन का विश्लेषण ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में किया गया है। इसमें सांख्यकारिका

प्रतिपादित सांख्य एवं तत्परक वाङ्मय, युक्तिदीपिका के परिप्रेक्ष्य में सांख्यदर्शन के मूल सिद्धान्तों, युक्तिदीपिका में वर्णित सृष्टिप्रक्रिया, सत्कार्यवाद एवं परिणामवाद के सिद्धान्तों, पुरुष की तत्वमीमांसीय परिकल्पना, सांख्यीय ज्ञानमीमांसा, दुःख एवं दुःख निवृत्ति का गहन विश्लेषण एवं अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

विषय सूची

1. सांख्य चिन्तन : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2. सांख्यकारिका प्रतिपादित सांख्य एवं तत्परक वाङ्मय 3. युक्तिदीपिका के परिप्रेक्ष्य में सांख्यदर्शन के मूल सिद्धान्त 4. युक्तिदीपिका मे वर्णित सृष्टिप्रक्रिया 5. कारणवाद - सर्तकार्यवाद एवं परिणामवाद का सिद्धान्त 6. पुरुष की तत्त्वमीमांसीय परिकल्पना 7. सांख्यीय ज्ञानमीमांसा 8. अपवर्ग -दुःख निवृत्ति 8. उपसंहार एवं निष्कर्ष। संदर्भ ग्रंथ सूची ।

585. शर्मा (अमित कुमार)

मेघनादारिसूरिविरचित नयद्युमणि का समालोचनात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : प्रो. मदन मोहन अग्रवाल

Th 16806

सारांश

शोध प्रबंध में मेघनादारि के जीवन, काल तथा रचनाओं के विषय में विस्तृत-विवेचन किया गया है । मेघनादारि द्वारा स्वीकृत प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द(शास्त्र), उपमान तथा अर्थापत्ति, इन पांच प्रमाणों का विवेचन किया गया है। साथ ही इन पंचप्रमाणों के लक्षण स्वरूपादि पर भी विस्तृत-विचार-विमर्श किया गया है । मेघनादारि द्वारा स्वीकृत, तथा प्राभाकर सम्मत स्वतः प्रामाण्य तथा परतः अप्रामाण्य को स्वीकार किया गया है तथा भाट्ट मीमांसकों, अद्वैतियों, तार्किकों एवं बौद्धों के प्रमाण्यसम्बन्धी विभिन्न सिद्धान्तों का दृढ़तापूर्वक खण्डन-मण्डन किया गया है। मेघनादारि द्वारा विपरीतख्याति, अनिर्वचनीयख्याति, असतख्याति तथा आत्मख्याति का खण्डन करने के पश्चात् विशिष्टाद्वैतमातानुकूल यथार्थख्याति की स्थापना की गई है। चिदचिद् विशिष्ट ब्रह्म को ही एक मात्र परमप्रमेय बतलाया गया है, तथा प्रमेय को पदार्थ बतलाकर उसके तीन भेद- द्रव्य, गुण और कर्म स्वीकार किए गए हैं तथा उनका विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है । मेघनादारि की शैली, उनके द्वारा किए गए अनेक दार्शनिक मतों के समन्वय, उनकी पूर्वाचार्यों से उपजीव्यता तथा परवर्ती

आचार्यों पर उनके प्रभाव के आधार पर उनका मूल्यांकन किया गया है ।

विषय सूची

1. मेधनादारिसूरि का जीवन परिचय, काल तथा रचनाएं 2. प्रमाण-मीमांसा 3. प्रामाण्यवाद-मीमांसा 4. ख्यातिवाद-मीमांसा 5. प्रमेय-मीमांसा 6. मेधनादारि का मूल्यांकन 7. उसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

586. शिवचरण

भगवान बुद्ध की शिक्षाओं में सामाजिक चेतना ।

निर्देशक : डॉ. इन्द्र नारायण सिंह एवं डॉ. पी. के. पाण्डा

Th 16917

सारांश

इस शोध ग्रंथ में सामाजिक चेतना की अवधारणा, अभिप्राय व व्याख्या तथा उसके विश्लेषण को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही साथ सामाजिक चेतना का पश्चगामी व पुरोगामी प्रवृत्ति के दृष्टिकोण को 'धर्म' से सम्बन्धित करने का प्रयत्न किया गया है। भगवान बुद्ध का जन्म, विवाह, गृह-त्याग आदि परिस्थितियों का विस्तृत विवेचन किया गया है। इसके साथ-साथ महापरिनिर्वाण की व्याख्या की गई है। भगवान बुद्ध के समय की सामाजिक व धार्मिक पृष्ठभूमि में सामाजिक दशा, धार्मिक अवस्था व बुद्ध के समकालीन दार्शनिकों के भावों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। भगवान बुद्ध द्वारा दिये गये सिद्धांतों व उपदेशों चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद, बोधिपक्षीय धर्म, त्रिलक्षण, कर्म, पुर्नजन्म, संघ, निर्वाण, ब्रह्म विहार आदि की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गई है। धर्म, बौद्ध धर्म का उद्भव संघ की स्थापना व व्यवस्था, बौद्ध युग में नारी की स्थिति व स्वतन्त्रता, समानता, भ्रातृव्व तथा भाषा की स्वतन्त्रता के प्रति सामाजिक चेतना, बौद्धकालीन वर्ण व्यवस्था, दास प्रथा व अहिंसा के सिद्धांत के साथ-साथ पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोणों की, सामाजिक चेतना अवधारणा के साथ समतुल्यता प्रस्तुत किया गया है ।

विषय सूची

1. सामाजिक चेतना का स्वरूप 2. भगवान बुद्ध का जीवन परिचय व जीवन दर्शन

3. भगवान बुद्ध के समय की सामाजिक व धार्मिक पृष्ठभूमि 4. भगवान बुद्ध की शिक्षाएँ 5. भगवान बुद्ध की शिक्षाओं में सामाजिक चेतना । उपसंहार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची।

587. सर्वेन्द्र कुमार

उत्तरांचल के मन्दिरों में वास्तुशास्त्र का विनियोग ।

निर्देशक : प्रो. देवेन्द्र मिश्र एवं पं. रामदेव झा

Th 16918

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में भूगोल एवं इतिहास की दृष्टि से उत्तरांचल का विवेचन किया गया है। इसमें नामकरण, स्थिति-विस्तार, जलवायु, वन, पर्वत आदि तथा प्रमुख शासक एवं उनके शासनकाल का विवरण दिया गया है। उत्तरांचल की संस्कृति, धर्म एवं कला पर प्रकाश डाला गया है। उत्तरांचल का विवेचन किया गया है, जिसमें मन्दिर शब्द का अर्थ, उपादेयता, महत्ता, मन्दिरों के उत्पत्ति विषयक भिन्न-भिन्न सिद्धान्तों एवं शिखरों के उद्‌भव आदि का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। मन्दिर भेद एवं वास्तुशिल्प के विकास का विवेचन किया गया है। इसमें द्रव्य, रचना, आकार एवं स्थापत्तीय रूप के आधार पर मन्दिरों के वास्तुशिल्प एवं उसका विकासक्रम का विवेचन किया गया है। आद्यकाल से गुप्तोत्तरकाल, मध्यकालीन एवं आधुनिक काल के मन्दिरों के वास्तुशास्त्रीय विनियोग को दर्शाया गया है । वास्तुशास्त्रीय विनियोग की दृष्टि से निर्मित उत्तरांचल के मन्दिरों पर भारतीय मन्दिर-वास्तुकला के प्रभाव का विवेचन किया गया है।

विषय सूची

1. भूगोल एवं इतिहास की दृष्टि से उत्तरांचल 2. उत्तरांचल की संस्कृति, धर्म एवं कला 3. मन्दिर वास्तुकला 4. उत्तरांचल : मन्दिर भेद एवं वास्तुशिल्प का विकास 5. आद्यकाल से गुप्तोत्तरकालीन मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय विनियोग 6. मध्यकालीन मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय (651-1761 ई.) विनियोग 7. आधुनिक काल के मन्दिरों का वास्तुशास्त्रीय विनियोग 8. वास्तुशास्त्रीय विनियोग की दृष्टि से निर्मित उत्तरांचल के मन्दिरों पर भारतीय मन्दिर वास्तुकला का प्रभाव । निष्कर्ष । संदर्भ ग्रन्थ सूची।

588. SINGH (Prachi)
Analytical Study of the Structure and Meaning of the Brahma-Sutras : With Special Reference to Samanvayadhyaya.
Supervisor : Prof. M M Agrawal
Th 16801

Abstract

Attempts to bring to light and provide solutions to some un-asked questions about the brahma-sutras, as a text and does exactly the same but with reference to the Badarayana, as a person. Contains the aphorisms of the Brahma-sutras 1.1-4. Deals with the methods employed and the views of Badarayana. This is followed by the Working Bibliography and the appendices referring to the topical texts, authorities, indeclinables and particles, variants, componds and a brief sketch of the commentators.

Contents

1. Intraoduction. 2. Badarayana. 3. An Analysis of the Brahma-Sutras 1:1. 4. An Analysis of the Brahma-Sutras 1:2. 5. An Analysis of the Brahma-Sutras 1:3. 6. An Analysis of the Brahma-Sutras 1:4. 7. Concluding Observations. 8. Working Bibliography. 9. Appendices.

M.Phil Dissertations

589. गांगुली (पृथा)
शाकटायन-धातुपाठ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. (श्रीमती) शन्नो ग्रोवर

590. गुप्ता (आयुष)
न्याय सिद्धान्त मुक्तावली के शब्द खण्ड का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. आशुतोष दयाल माथुर

591. तोसावड़ा (सुरेन्द्र कुमार)
पंचदशी में प्रतिपादित द्वैत-विवेक का अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. शकुन्तला पुंजानी

592. भारद्वाज (अनिरूद्ध)
पाणिनीय व्याकरण के अध्ययन मे पश्चात्य विद्वानों का योगदान ।
निर्देशक : डॉ. ओमनाथ बिमली

593. पाण्डेय (सुजीत कुमार)
विज्ञानभैरव का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. शकुन्तला पुंजानी

594. मिगलानी (शालिनी)
योगदर्शन में आचारमीमांसा : सिद्धान्त एवं प्रयोग ।
निर्देशिका : प्रो. शकुन्तला पुंजानी

595. वीरेन्द्र कुमार
प्रो. अभिराजरोन्द्रमिश्र कृत विद्यीत्तमा नाटिका का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. गिरीश चन्द्र पन्त

596. शर्मा (देव)
वैदिकी प्रक्रिया के आधार पर रुद्रपरक मंत्रों का विश्लेषण ।
निर्देशक : डॉ. श्री वत्स

597. संजीव कुमार
महाभाष्य में प्रातिपदिकार्थशेषाह्निक का अध्ययन : प्रदीप एवं उद्द्योत के सन्दर्भ में ।
निर्देशक : डॉ. मिथिलेश चतुर्वेदी

598. सांखला (रीना)
अथर्ववेद में परिवार ।
निर्देशिका : डॉ. उषा चौधुरी

599. सुनीता
वास्तुशास्त्र में शल्य विचार।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा

600. सुशीला कमारी
न्यायदर्शन में सिद्धान्त पदार्थ-निरूपण ।
निर्देशक : डॉ. सत्यमूर्त्ति

601. सुषमा
चान्द्र धातुपाठ का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. सन्ध्या राठौर

602. सुषमा देवी
स्मृतियों में उपस्थापित कर्म-सिद्धान्त : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ।
निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा

603. सैनी (प्रतिभा)
शाब्दबोध : एक परम्परा ।
निर्देशक : प्रो. मदनमोहन अग्रवाल